A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में पांच पीरों का सांस्कृतिक महत्व

Jagrati Yadav[1], Prof. Vandana Kalla[2]

1 Researcher, Music Department, Rajasthan University, Jaipur Rajasthan University, Jaipur
2 Research Guide (Head of Music Department) Rajasthan University, Jaipur Rajasthan University, Jaipur

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

भारत एक विविधता से भरा हुआ देश है जहां विभिन्न परंपराएं, धार्मिक मान्यताएं, आस्थाएं देशभक्ति की भावना व लोक जन कल्याण के हेतु वीर योद्धाओं का बलिदान आदि सभी भारतीय लोक संस्कृति का प्रतीक है। भारत में विशिष्ट पहचान रखने वाला राजस्थान की लोक संस्कृति में भी इसी प्रकार की धार्मिक मान्यताएं देखने को मिलती हैं। धोरों की धरती कहलाने वाला राजस्थान में ऐसे वीर योद्धाओं का जन्म हुआ जिन्होंने जनकल्याण, गौ रक्षा, वचनबद्धता का पालन करते हुए अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दिया। और जन-जन में लोक देवता के रूप में पूजे जाने लगे। जिन्हें साधारण जनमानस की भाषा में पांच पीर के नाम से भी जाना जाता है। पंच पीर शब्द आमतौर पर सूफी संतों के लिए प्रयुक्त होता है जो इस्लामी परंपरा से जुड़े हुए हैं लेकिन लोक संस्कृति में इन्हें हिंदू धर्म के देवी देवताओं की तरह ही श्रद्धा और सम्मान दिया है। यह पीर धार्मिक मतों से परे जाकर लोगों को करुणा भाईचारा सहिष्णुता और एकता का संदेश देते हैं। राजस्थान में पांच पीरों में गोगाजी, हरभूजी, पाबूजी, मेहा जी और रामदेव जी शामिल है। इन्हे हिन्दू व मुस्लिम दोनों धर्मों के लोगों द्वारा पूजा जाता है।

मुख्य शब्द *-मेला, पाँच पीर, श्रद्धालु ,संरक्षण, धरोहर, पवाड़े*

भूमिका

विषम परिस्थितियों में राजस्थान में कुछ ऐसे महान व्यक्तित्व जनता के समक्ष उभरे जिन्होंने न केवल तथाकथित निम्न वर्ग की जातियों को संरक्षण व स्नेह प्रदान किया, प्रत्युत स्थानीय जनता और पशुओं (गाय) की भी रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग किया। शक्ति, भक्ति, योग एवं अलोकी चमत्कारों से युक्त वीरता पूर्ण कृतियों से कुछ वीर महापुरुष लोक देवता के रूप में प्रसिद्ध हुए इनमें गोगाजी, पाबूजी, रामदेव जी, मेहा जी, हरबूजी हाड़ी मुख्य थे जिनके शौर्य आत्मसर्ग तथा लोकोपकारी कृत्यों से अभिभूत होकर राजस्थान की जनता ने उन्हें आराध्य जैसा पूज्यत्व प्रदान किया। ऐसे वीर महापुरुषों की जीवनचर्या और उपलब्धियां, ऐतिहासिक व्यक्तित्व केवल तत्कालीन युग हेतु ही नहीं वरन् युगों-युगों की धरोहर के स्वरूप है। इनके अप्रीतम बलिदानों के समक्ष श्रद्धावत जनमानस ने इन्हें देव तुल्य पूज्यत्व तथा श्रद्धा प्रदान करके युगों-युगों तक उनकी समृति व उनके सिद्धांतों के प्रति अपनी आस्था के अक्षुण्ण बना दिया।

गोगाजी

राजस्थान के हिंदू सामुदाय गोगाजी की नागराज देवता के रूप में पूजा करता है। वही मुस्लिम पीर के रूप में मानते हैं। राजस्थान में इन्हें पंच पीर के अंतर्गत मानकर गोगापीर कहा जाता है। इन्हें जाहर पीर के नाम से भी संबोधित किया जाता है। गोगा जी का प्रसिद्ध मंदिर गोगामेड़ी की आकृति मकबरानुमा है जिसके दरवाजे पर 'बिस्मिल्हा' अंकित हुआ मिलता है। गोगाजी लोक आस्था के केंद्र बन चुके हैं तथा जनमानस के हृदय में गौ रक्षक, मातृभूमि एवं धर्म रक्षक महान वीर सिद्ध पुरुष तथा सर्प रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। सर्पदंशित व्यक्ति की प्राण रक्षा के संबंध में प्रचलित गोगाजी के चमत्कारों में एक विशाल जन समुदाय को अपना अनुयायी बना दिया है। गोगाजी हिंदू और मुस्लिम दोनों जातियों के उपास्य है। हिंदू मुस्लिम एकता एक सांस्कृतिक समसता के प्रतीक माने जाते हैं राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले की में गोगामेडी ग्राम में लोक देवता गोगा जी के विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। गोगा जी की मेले में आयोजित गोगा जी के गीतों में ढोलक, मृदंग, ढोल, नगाड़े आदि वाद्य बजाते हैं यहां पशुओं का मेला भी लगता है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

पाबू जी

कोलू ग्राम स्थित पाबूजी मंदिर का छायाचित्र

लोकनायक पाबूजी राठौड़ राजस्थान के प्रमुख लोक देवता है। न्याय के लिए अन्याय के विरुद्ध आजीवन संघर्षरत रहे नारी सम्मान, शरणागत की रक्षा, वचन निर्वाह, न्याय और वीरता अलौकिक शक्तियों से दुराचारियों का दमन करते हुए गौ एवं धर्म की रक्षार्थ युद्ध करते हुए शहीद होने वाले पाबूजी जनमानस में अत्यधिक प्रचलित है। पाबूजी का प्रसिद्ध मेला फलोदी जिले के कोलू ग्राम में लगता है। इस मेले में हिंदुओं के साथ-साथ मेहर मुसलमान भी पाबूजी को पाबू 'पीर' के रूप में मानते हैं। इस प्रकार यह मेला भी गोगाजी के गोगामेडी मेले के भांति सांप्रदायिक सद्भावना एवं राष्ट्रीय एकता, भाईचारा स्थापित करने तथा अस्पृश्यता का भेदभाव समाप्त करने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। इस मेले मे पाबूजी की फड़ बांचन, थाली नृत्य, माटे वाद्य पर पाबूजी का गुणगान किया जाता है वर्तमान राजस्थान धरोहर प्राधिकरण, जयपुर के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत जी ने साक्षात्कार के दौरान बताया कि कोलूग्राम में पाबूजी मंदिर के पास ही पाबूजी के जीवन गाथा व जन कल्याण के कार्यों को जनमानस तक पहुंचाने के लिए पैनोरमा भी स्थापित किया गया जिससे नई युवा पीढ़ी को राजस्थान के वीर योद्धाओं के बारे में जानकारी दी जा सके तथा राजस्थान के साहित्य व सांस्कृतिक पहलुओं से अवगत कराया जा सके।

रामदेव जी-

रामदेव मंदिर छायाचित

पश्चिमी राजस्थान में ही नहीं संपूर्ण राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में रामसा पीर रुणिचा रा 'धणी' व बाबा रामदेव जी नाम से विख्यात लोक देवता रामदेव जी का मंदिर पोकरण जैसलमेर से 13 किलोमीटर उत्तर स्थित रुणेचा में स्थित है रामदेव जी के मेले का शुभारंभ ध्वजारोहण के साथ होता है यह ध्वजारोहण जिला कलेक्टर के द्वारा किया जाता है। गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा जर्मनी, रूस, अमेरिका, फ्रांस आदि स्थानों से श्रद्धालु आते हैं। हिंदू समुदायों के साथ-साथ मुस्लिम समुदाय के लोग भी रामसा पीर के रूप में बाबा को श्रद्धा आस्था प्रकट करते है। यह मेला भी राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भावना का प्रतीक माना जाता है। इस मेले का मुख्य आकर्षण 13 ताली नृत्य होता है। जो कामड जाति के महिलाओं द्वारा रावणहत्था वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है। स्त्रियों द्वारा शरीर पर तेरह मंजीरे बांधकर इस नृत्य को किया जाता है। दो मंजीरे दाहिने पैर में , दो मंजीरे कोहनी तथा दो मंजीरे हाथों में पहने जाते हैं रामदेव जी के पर्चों पर आधारित भजन संगीत से वहां का वातावरण भक्ति में हो जाता है। भजन कलाकारों से चर्चा के दौरान पता चला कि मेले के अलावा प्रतिदिन यहां रामदेव जी के भजन होते हैं और रामदेव जी के श्रद्धालु द्वारा जो भेट दी जाती है उसे ही कलाकारों का घर का खर्च चलता है।

रामदेव मंदिर जागरण कलाकार साक्षत्कार छायाचित्र

ओंकार सिंह लखावत से साक्षत्कार छायाचित्र

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

मेहा मांगलिया

मेहा मांगलिया छायाचित्र

मेहा जी मांगलिया राजस्थान के लोक देवताओं में पांच लोक देवता में प्रमुख हैं। सत्य, धर्म और न्याय के लिए अन्याय के विरुद्ध आत्मोसर्ग करने से इनकी पंचवीर के नाम की पूजा की जाने लगी। पंचवीर में मेहा जी मांगलिया का प्रमुख स्थान है। मेहा जी एक वीर एवं पराक्रमी पुरुष थे। इन्होंने सत्य के लिए असह्याय, अबला, गौ रक्षा के साथ क्षत्रिय धर्म का पालन किया। मेहा जी मांगलिया का मेला प्रतिवर्ष जोधपुर जिले की ओसिया तहसील के ग्राम बदिणी में भरता है। मेहाअष्टमी के दिन रात्रि में मेहा जी के वीरोतेज पवाडे गाए जाते हैं। मेले के दौरान रात्रि जागरण का आयोजन होता है। यह धार्मिक मेला त्याग बलिदान एवं सतधर्म, पशुओं के रोग से संबंधित समस्याओं का निवारण ,राष्ट्रीय प्रेम की भावना का प्रतीक है। मेले में जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, गुजरात, मध्य प्रदेश आदि स्थानों से श्रद्धालु जन मेले में आते हैं।

हड़बूजी साँखाला

मंडोर उद्यान स्थित हड़बूजी सांखला का छायाचित्र

हड़बूजी शकुन विचारक, सिद्ध योगी, भविष्यदृष्टा, चमत्कारी व्यक्तित्व के स्वामी, एक वीर योद्धा, गौ सेवक असहाय तथा अभाव ग्रस्त निर्बलों की रक्षक एक संत प्रवृत्ति के महापुरुष थे लोक देवता हड़बूजी सांखला का मेला उनके मंदिर फलोदी जिले के ग्राम बेंगटी में लगता है। इसमें सभी जाति व धर्म के लोग भाग लेते हैं। रात्रि जागरण के दौरान हड़बूजी के दोहे, लोक भजन, लोकगीत व रामदेव जी-हड़बूजी के संवाद व हड़बूजी की वाणीयां सुनाकर जनमानस को अभिभूत किया जाता है। तथा इन्हें सफेद ध्वजा चढाया जाता है। इस मेले को किसान व पशुपालकों का मेला कहा जाता है।

उपसंहार

राजस्थान में लोक देवता के रूप में पूजे जाने वाले पांच पीर रामदेव जी, पाबूजी, हडबूजी, गोगाजी मेहा जी का साहित्य धार्मिक, लोक कथाएं जनमानस में देश प्रेम की भावना धार्मिक आस्था ,जीवरक्षा, वचनबद्धता आदि का निर्वाह करने में मदद करता है। लोक देवताओं की फड़ तथा लोकगीत- जागरण सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा स्थापित पैनोरमा व सांस्कृतिक मेलों कार्यक्रम के माध्यम से राजस्थान की सांस्कृतिक ,वीरतापूर्ण कार्यों का निर्वाह राजस्थान ही नहीं विदेशों में भी करने में मदद मिलती है। जो राजस्थानी संस्कृति को उन्नत करने में सहायक है।

संदर्भ

गहलोत महावीर सिंह, राजस्थान के पांच लोक देवता, राजस्थान साहित्य मंदिर प्रकाशन
राठौड गजराज सिंह ,लोक देवी- देवता एवं संत संप्रदाय, राजस्थानी ग्रंथागार प्रकाशन
डॉ. भाटी विक्रम सिंह, राजस्थान के लोक देवता, राजस्थानी शोध संस्थान प्रकाशन
राजस्थान धरोहर प्राधिकरण अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ,साक्षात्कार जयपुर 03/02/2025
डॉ. राठौड महिपाल सिंह, राजस्थानी साहित्य में लोक देवता पाबूजी, हिमांशु पब्लिकेशन, जयपुर
कलाकार शायर जी, रामदेव मंदिर साक्षात्कार जैसलमेर, 10/02/2025
डॉ. सालवी सुरेश, राजस्थानी लोक संस्कृति एवं लोक देवी देवता , हिमांशु प्रकाशन
डॉ सिंह भंवर , राजस्थान के लोक देवताओं का सांस्कृतिक इतिहास, रॉयल प्रकाशन